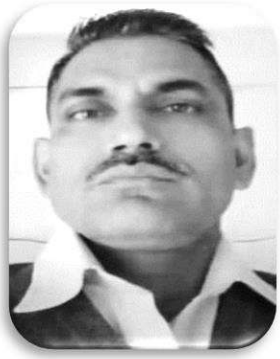

गिरिराज पांडे
वीर मऊ, प्रतापगढ़

कविता

जिया पर कभी जिंदगी जी न पाया
हंसी होठ से अपने सीने के गम को
छुपाना तो चाहा छुपा ही न पाया
मोहब्बत का अंजाम ऐसा भी होगा
ये जख्मों की दुनिया समझ ही न पाया
सोचा था पाऊंगा हुस्न ए मोहब्बत
मिला ना कभी गुल सदा खार पाया
सदा ढूंढता ही रहा दिल की दौलत
फसाना गमों का सदा हाथ आया
दिल की किताबें पढ़ी दिल से मैंने
मगर दिल ये क्या है समझ ही न पाया
भ्रमण तो किया दिल की बगिया में लेकिन
महक प्यार की मैं कभी ले न पाया
मोहब्बत नशा दिल को ऐसा नचाया
संभलना तो चाहा संभल ही ना पाया
सरकती रही जिंदगी धीरे-धीरे
जिया पर कभी जिंदगी जी न पाया

देवेन्द्र डहेरिया देशज

गजल

लिखी है भाग्य में नफ़रत मुहब्बत फिर मिलेगी क्या।
जहां रहवर लुटेरे हों वो बस्ती फिर बसेगी क्या ॥

जहां हो बोलबाला बस दिखावे की अराइस का।
वहाँ पर सादगी की भी कोई कीमत लगेगी क्या ॥

उसे है नाज अपने हुश्न का तो दोस्त रहने दो।
ढलेगी उम्र तो लम्बी कतारें फिर लगेगी क्या ॥

नहीं है इश्क का अहसास तो मदहोश सी है वो।
करेगी प्यार हमसे एक तितली सी उड़ेगी क्या ॥

अभी तकलीफ है उसको हमारी बात सुनने में।
रहेंगे हम नहीं तो फिर कहेगी क्या सुनेगी क्या ॥